ISSN 0974-8857

तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

(A UGC-recognized Peer-reviewed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 46 • Vol. 181-182 • Issue: January-June, 2019 (II)

Acharya Mahapragya Birth Centenary 1920-2020

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूं - 341 306 (राजस्थान)

ISSN 0974-8857

Tulsī Prajñā

(A UGC-recognized Peer-reviewed Quarterly Research Journal of JVBI)

Year : 46 Vol. 181-182 Issue: January-June, 2019 (II)

Patron
Prof. Bachhraj Dugar
(Vice-Chancellor)

Editor
Dr. Samani Bhaskar Pragya
Dr. Samani Amal Pragya
Dr. Samani Samyaktva Pragya

Managing Editor
Mohan Siyol

Publisher
Jain Vishva Bharati Institute
Ladnun 341306 (Raj.) India

Contact us: **tulsiprajnarj@gmail.com**
9887111345

काव्यभाषा और रत्नपालचरितम् 108
प्रो. हरिशंकर पाण्डेय

आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि में जीवन 117
प्रो. प्रद्युम्न शाह सिंह

आचार्य महाप्रज्ञ का प्राकृत व्याकरण को अवदान 121
प्रो. कल्पना जैन

जैनाचार जगत् में आचार्य महाप्रज्ञ का मौलिक अवदान 130
डॉ. समणी शशिप्रज्ञा

आचार्य महाप्रज्ञ के वाङ्मय में अनेकान्त का अनुप्रयोग 140
साध्वी शरदयशा (समणी शारदाप्रज्ञा)
डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा

प्राच्य भाषाओं के विकास में आचार्य महाप्रज्ञ का योगदान 148
(प्राकृत भाषा के विशेष संदर्भ में)
डॉ. वंदना मेहता

आचार्य महाप्रज्ञ के आध्यात्मिक चिन्तन की प्रासंगिकता 155
डॉ. ज्योतिबाबू जैन

Ahiṃsā Yātrā: Ācārya Mahāprajña's Initiative of Transforming Personal and Structural Violence 161
Dr Samani Rohini Pragya

Value-based HRM for a sustainable socio-economic order, with a special reference to HH Acharya Shree Mahaprajna : A Phenomenological Study 170
Richa Jain

Change of Heart for Value-based Human Resource Management: HH Acharya Mahaprajna's Doctrine 185
Shailee Jain

आचार्य महाप्रज्ञ : वाङ्मय परिचय 200
मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा

आर.एन.आई. सं. 3653/57
प्रकाशन तिथि 5 से 8 दिसम्बर, 2020
डाक प्रेषण तिथि 10-11 दिसम्बर, 2020

वर्ष : 78 अंक : 12
मार्गशीर्ष, 2077 मूल्य : ₹ 100
पृष्ठ संख्या 476

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2018-20
WPP Licence No. Jaipur City/WPP-04/2018-20
Posted at Jaipur RMS (PSO)

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

दिसम्बर, 2020

जैन जीवनशैली विशेषाङ्क

आचार्य हस्ती
दीक्षा-शती वर्ष

शोध प्रकाशन एवं शैक्षणिक अवदान
( ) सम्पादित प
शोध पत्र

Website : www.jinwani.in

पारिवारिक शान्ति वहीं कायम रहती है, जहाँ परिवार का प्रत्येक सदस्य अपने सुख को गौण और दूसरे सदस्यों के सुख को मुख्य मानकर व्यवहार करता है।

– आचार्य श्री हस्ती

अनर्थदण्ड : व्यर्थ का पाप	डॉ. धर्मचन्द जैन	294
वैज्ञानिक युग और जैन जीवनशैली	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार कांकरिया	298
कर्मसिद्धान्त और पुरुषार्थ का पारस्परिक सम्बन्ध	श्री धर्मचन्द जैन	300
जैन जीवनशैली से लाभ	श्री पारसमल चण्डालिया	305
जैनधर्म में अहिंसक जीवनशैली पर बल क्यों?	श्री जिनेन्द्र कुमार जैन	307
अहिंसा की विवेचना	डॉ. एन. के. खींचा	311
सत्य और अस्तेय : अणुव्रत एवं प्रामाणिकता	श्री. पी. शिखरमल सुराणा,डॉ. दिलीप धींग	313
ब्रह्मचर्य की बहुआयामी महिमा	डॉ. दिलीप धींग	317
प्राकृत-साहित्य में निरूपित काम-विजय की प्रेरणा	प्रो. कल्पना जैन	324
जैन-जीवन में अर्थोपार्जन एवं उपयोग	प्रो. सी. एस. बरला	330
अणुव्रतों के पालन से आर्थिक लाभ	श्री वीरचन्द्र जैन	334
जैन परम्परा में व्याप्त उदारता	डॉ. देव कोठारी	337
जीवन में संयम का महत्त्व	डॉ. सुभाष कोठारी	344
जैन जीवनशैली का उदार पक्ष : अन्तरायहीनता	डॉ. सुरेन्द्र कुमार जैन	346
परिमाण-व्रतों का जीवन में महत्त्व	श्री धर्मचन्द जैन	349
पारिवारिक जीवन में शान्ति एवं सामरस्य	श्री शान्तिलाल बोहरा	353
प्रतिक्रमण और स्वास्थ्य	डॉ. चंचलमल चोरडिया	356
आहार का विवेक	सुश्री नेहा चोरडिया	360
संलेखना-संथारा जैन जीवनशैली का शिखर चरमोत्कर्ष	श्री जितेन्द्र कुमार डागा	363
संथारा-मरण : एक विशिष्ट जीवनशैली	श्री अरुण मेहता	371
जैन जीवनशैली का बालकों में बीजारोपण कैसे हो?	डॉ. मंजुला बम्ब	374
जैन जीवनशैली में शाकाहार	श्री पदमचन्द गाँधी	379
ब्रह्मचर्य की जीवनशैली	श्री संजय सुराणा	385
वाणी का संयम : क्यों और कैसे?	डॉ. सुमत कुमार जैन	390
समभाव की साधना : सामायिक आराधना	श्री हेमन्त डागा	397
स्वाध्याय से आत्म-विशुद्धि एवं लोकहित	श्री प्रमोद महनोत	401
स्वाध्याय से होता तत्त्वज्ञान	श्री देवेन्द्रनाथ मोदी	403
विश्वशान्ति के परिप्रेक्ष्य में जैन जीवन-पद्धति	श्री त्रिलोक चन्द जैन	405
शिक्षा में जैन जीवनशैली का समावेश	श्री निपुण डागा	410
सप्तकुव्यसनों के त्याग का महत्त्व	श्रीमती सुशीला बोहरा	413
मदिरापान क्यों वर्जनीय है?	श्री दिलीप जैन	418

स्थापित जुलाई 1988

ISSN No. 0971-796X

प्राकृतविद्या

वर्ष 35, अंक 1

जनवरी-मार्च 2022 ई.

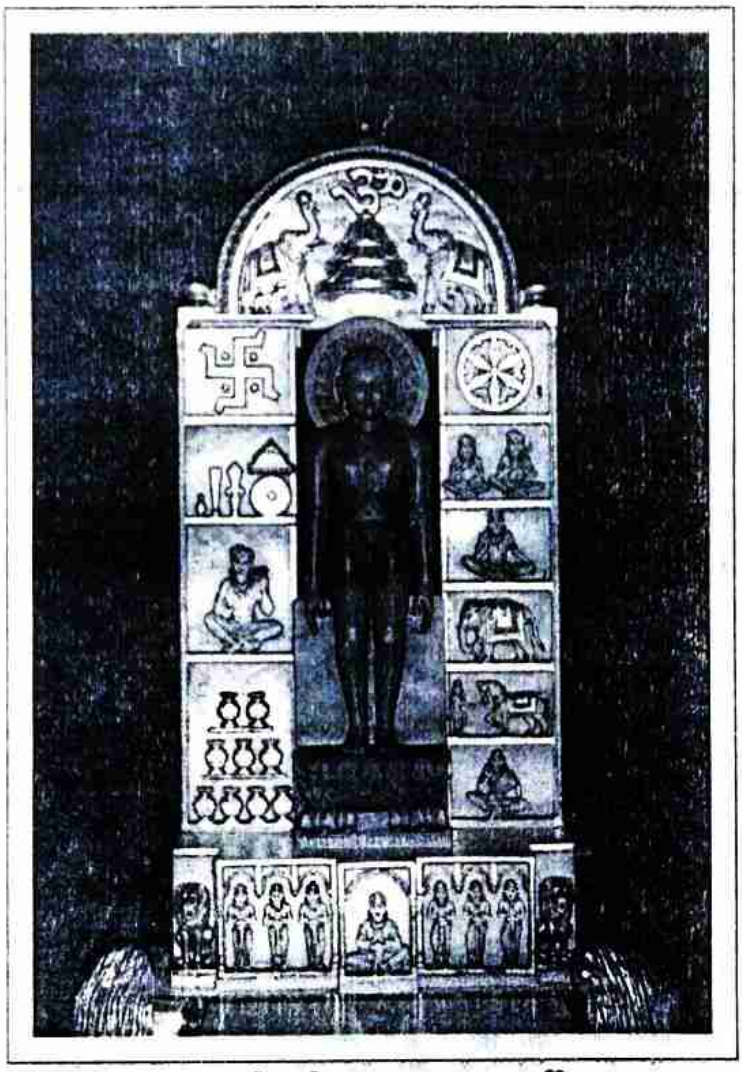

ऋषभदेव के पुत्र भरत चक्रवर्ती
जिनके नाम पर हमारे देश का नाम 'भारतवर्ष' पड़ा।
श्री दिगम्बर जैन भरत चैत्यालय, कुन्दकुन्द भारती, नई दिल्ली

UGC Approved Research Journal

ISSN No. 0971-796 ×

प्राकृत-विद्या
पागद-विज्जा

PRAKRIT-VIDYA
Pāgada-Vijjā

प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राच्य भारतीय भाषाओं की हिन्दी तक की विकास-यात्रा दर्शानेवाली समर्पित त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

A quarterly journal devoted to researches on the development of Prakrit, Apabhramsha and Ancient Indian Languages upto Hindi Language

वीर निर्वाण संवत् 2548 जनवरी-मार्च 2022 वर्ष 35 अंक 1

Veer Nirvan Samvat 2548 January-March 2022 Year 35 Issue 1

आचार्य कुन्दकुन्द समाधि-संवत् 2026

सम्पादक-मण्डल

श्री पुनीत जैन
(नवभारत टाइम्स)

डॉ. रमेश कुमार पाण्डेय
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय)

मानद सम्पादक

प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन
(श्री ला.ब..शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

प्रबन्ध सम्पादक

श्री कमलकान्त जैन

प्रकाशक
श्री अनिल कुमार जैन
महामन्त्री
श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट
18-बी, स्पेशल इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली-110067
फोन : (011) 26564510, 46062192
ई-मेल: kundkundbharti@gmail.com

Publisher
SHRI ANIL KUMAR JAIN
Secretary
Shri Kundkund Bharti Trust
18-B, Special Institutional Area
New Delhi-110067
Phone: (011) 26564510, 46062192
E-mail: kundkundbharti@gmail.com

इस प्रति का मूल्य—बीस रुपया

january-march 2022 FINAL.pmd 1 4/2/2022, 1:13 PM

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
1.	मंगलाचरण : परदव्वादो दुग्गदि	आचार्य कुन्दकुन्द	3
2.	सम्पादकीय : अर्थोद्घाटन	प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन	5
3.	आचरितुं योग्यः आचार्यः	आचार्य विद्यानन्द मुनिराज	12
4.	जैन योग में समिति	आचार्य श्रुतसागर मुनिराज	15
5.	प्राकृत जैन ग्रंथों में वर्णित स्वास्थ्य संबंधी अवधारणाएँ	प्रो. कल्पना जैन	27
6.	अट्ठारह भाषाएँ बोलने वाला भारत	डॉ. दिलीप धींग	36
7.	जिनवाणी ही सरस्वती है	डॉ. शुद्धात्म प्रकाश जैन	42
8.	पंच समवाय और वंस्तु स्वातंत्र्य	डॉ. योगेश कुमार जैन	46
9.	जैन स्तोत्र साहित्य में पर्यावरण-संरक्षण के तत्त्व	तपिश कुमार जैन	59
10.	प्राकृत ग्रन्थों में कार्यपालिका का स्वरूप	रीना जैन	64
11.	जैनवाङ्मय में योग विषयक कृतियाँ	राहुल कौशिक	71
12.	सोलह कारण भावना : एक अनुचिंतन	सुजश जैन 'मारौरा'	74
13.	तप – संयम का एक अंग	पल्लवी मंजीत बागी	81
14.	समाचार-दर्शन		89

'भारतनामा' : प्रत्येक भारतीय को पठनीय है

भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से अभी-अभी एक महत्त्वपूर्ण कृति प्रकाशित हुई है, जिसका शीर्षक है– 'भारतनामा'। इस कृति में हमारे देश भारतवर्ष का नाम भारत क्यों है, किसके नाम पर है, कब से है, इत्यादि विषयों का सप्रमाण समीक्षण किया गया है। 248 पृष्ठ की इस कृति में देश भर के अनेक धुरन्धर विद्वानों के हिन्दी, गुजराती, तमिल, कन्नड़, मराठी, अंग्रेजी आदि अनेक भाषाओं में संबंधित विषय के पठनीय लेख हैं। कृति का सम्पादन विख्यात विदुषी प्रभाकिरण जैन ने किया है। इस कृति पर अनेक परिचर्चाएँ भी इन दिनों आयोजित हो रही हैं। 'भारतवर्ष' नाम के सही अर्थ को समझने के लिए यह कृति प्रत्येक भारतीय को अवश्य पठनीय है। कृति का मूल्य 500 रूपये रखा गया है।

january-march 2022 FINAL.pmd 2 4/2/2022, 1:13 PM

स्थापित जुलाई 1988

ISSN No. 0971-796X

प्राकृतविद्या

वर्ष 35, अंक 2

अप्रैल-जून 2022 ई.

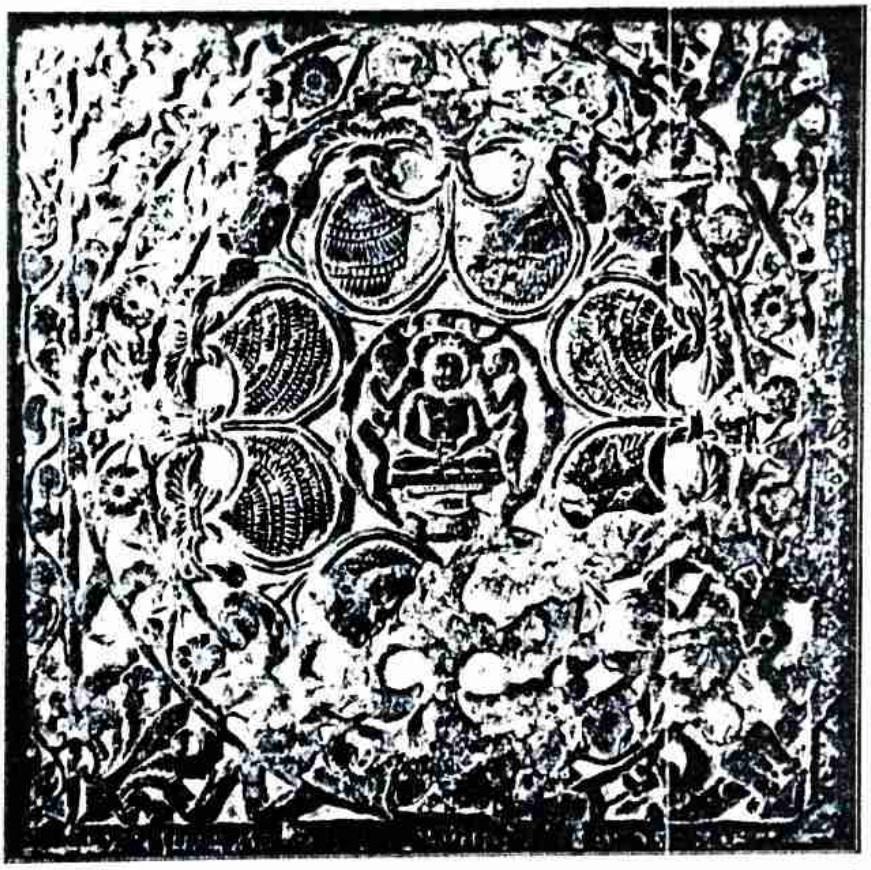

कंकाली टीला मथुरा से प्राप्त आयागपट्ट में उत्कीर्ण अर्हत् पार्श्व की प्राचीनतम दुर्लभ प्रतिमा पूर्वकुषाणकालीन द्वितीय सदी पूर्वार्द्ध

लेख— नमो अरहनतान्.....शिव घोस (T).....आयाग

—लखनऊ संग्रहालय में सुरक्षित

UGC Approved Research Journal

ISSN No. 0971-796 ×

प्राकृत-विद्या

पागद-विज्जा

PRAKRIT-VIDYA

Pāgada-Vijjā

प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राच्य भारतीय भाषाओं की हिन्दी तक की विकास-यात्रा दर्शानेवाली समर्पित त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

A quarterly journal devoted to researches on the development of Prakrit, Apabhramsha and Ancient Indian Languages upto Hindi Language

वीर निर्वाण संवत् 2548 अप्रैल-जून 2022 वर्ष 35 अंक 2

Veer Nirvan Samvat 2548 April-June 2022 Year 35 Issue 2

आचार्य कुन्दकुन्द समाधि-संवत् 2026

सम्पादक-मण्डल

श्री पुनीत जैन
(नवभारत टाइम्स)

डॉ. रमेश कुमार पाण्डेय
(श्री ला.ब.शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय)

मानद सम्पादक

प्रो. (डॉ.) वीरसागर जैन
(श्री ला.ब..शा.रा. संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली)

प्रबन्ध सम्पादक

श्री राजेन्द्र जैन (संघपति)

प्रकाशक
श्री अनिल कुमार जैन
महामन्त्री
श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट
18-बी, स्पेशल इन्स्टीट्यूशनल एरिया,
नई दिल्ली-110067
फोन : (011) 26564510, 46062192
ई-मेल: kundkundbharti@gmail.com

Publisher
SHRI ANIL KUMAR JAIN
Secretary
Shri Kundkund Bharti Trust
18-B, Special Institutional Area
New Delhi-110067
Phone: (011) 26564510, 46062192
E-mail: kundkundbharti@gmail.com

इस प्रति का मूल्य—बीस रुपया

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	लेखक	पृ.सं.
1.	मंगलाचरण : ध्यान में देश-काल-आसनादि का नियम		3
2.	सम्पादकीय : भक्तामर स्तोत्र आखिर क्यों महान है?	प्रो. वीरसागर जैन	4
3.	धर्म का अर्थ सम्प्रदाय नहीं	आचार्य विद्यानन्द मुनिराज	12
4.	जैन योग में यम एवं नियम	आचार्य श्रुतसागर मुनिराज	14
5.	आचार्य शान्तिसागरजी के सरल उपदेश	प्रो. कल्पना जैन	28
6.	तिलोयपण्णत्ति में मुनिसुव्रतनाथ	प्रो. अनेकान्त कुमार जैन	32
7.	स्वस्थ जीवन का आधार : प्रतिक्रमण	डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा	36
8.	आचार्य वीरसेन स्वामी और उनकी जयधवला टीका का वैशिष्ट्य	डॉ. इन्दु जैन	47
9.	मध्य प्रदेश में जैन धर्म का विकास	डॉ. मो. मंजर अली	56
10.	निःशस्त्रीकरण की आवश्यकता	डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन	67
11.	जैन सिद्धांत में कारण-कार्य भाव	डॉ. कुलदीप कुमार	70
12.	भगवान महावीर की जन्मभूमि वासोकुण्ड के प्रमाण	डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल	75
13.	वैशालिक भगवान महावीर का मूल्यात्मक चिंतन	डॉ. ऋषभचन्द्र 'फौजदार'	85
14.	समाचार-दर्शन		93

जैन न्याय पर प्रकाशित हुई एक पठनीय कृति

भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली से अभी-अभी जैन न्याय की एक महत्त्वपूर्ण कृति प्रकाशित होकर आई है– 'जैन-न्याय-प्रदीपिका'। प्रो. वीरसागर जैन द्वारा लिखित इस कृति में उनके जैन न्याय से सम्बन्धित 48 लेखों का संग्रह है। जैसे कि– जैन न्याय का प्राथमिक परिचय, न्यायशास्त्र के अध्ययन की आवश्यकता, न्यायशास्त्र की दैनिक जीवन में उपयोगिता, मिथ्यात्व के नाश में न्यायशास्त्र की भूमिका,सर्वज्ञसिद्धि, अनेकांत-स्याद्वाद, प्रमेय का स्वरूप, हेतु और हेत्वाभास, कारण-कार्य-व्यवस्था, निक्षेप-विमर्श, जैन न्याय का संक्षिप्त लक्षणकोश, शब्दकोश, आदि। जैन न्याय प्रायः बहुत कठिन और नीरस माना जाता है, परन्तु इस कृति में उसे बहुत ही सरल और सरस शैली में प्रस्तुत किया गया है। न्यायविद्या एक अत्यंत प्रयोजनभूत और उत्कृष्ट विद्या है। यह कृति उसके जिज्ञासुओं के लिए वरदानस्वरूप है। 288 पृष्ठ की इस कृति का मूल्य 335 रुपये रखा गया है।